

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

सिंधु घाटी सभ्यता प्रागैतिहासिक कालीन विश्व की प्रमुख सभ्यताओं जैसे मेसोपोटामिया, मिश्र तथा चीन की सभ्यताओं में से एक है। रेडियो, कार्बन डेटिंग के आधार पर इस सभ्यता का काल 2600 ई. पू. से 1900 ई. पू. के बीच में निर्धारित किया गया है। सिंधु घाटी सभ्यता को भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता भी कहा जाता है। हड़प्पा के खंडहरों का वर्णन 1842 में चार्ल्स मैसन ने अपने बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, और पंजाब की विभिन्न यात्राओं के विवरण में किया था। 1856 में अलेक्जेंडर कनिंघम, जो कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक थे ने हड़प्पा स्थल का अवलोकन वहां ब्रिटिश इंजीनियर जॉन और विलियम ब्रंटन कराची और लाहौर शहर को जोड़ने वाली ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी लाइन बिछा रहे थे। 1872-75 में कनिंघम ने हड़प्पा की पहली मुहर का प्रकाशन किया। वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष सर जॉन मार्शल के निर्देशन में हड़प्पा की खुदाई करवाई गई जिससे इस सभ्यता के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सकी। इसे कांस्य युगीन सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इस समय तक कांसा ही एकमात्र ज्ञात मिश्र धातु थी। इसे हड़प्पा की सभ्यता भी कहते हैं, क्योंकि हड़प्पा इस सभ्यता का ज्ञात पहला नगर था।

हड़प्पा सभ्यता की सीमायें

यह सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप के पंजाब सिंध बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान हरियाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश के सीमांत भाग में फैली हुई थी। इस सभ्यता का विस्तार पूर्व में उत्तर प्रदेश के आलमगीर (मेरठ), पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान समुद्रतट के सुत्कागण्डोर, उत्तर में जम्मू कश्मीर में चिनाब नदी के किनारे स्थित मांडा तथा दक्षिण में महाराष्ट्र के दैमाबाद तक मिलता है। त्रिभुजाकार इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल लगभग 13 लाख वर्ग किमी. तक है जो कि मिश्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता के सम्मिलित क्षेत्रफल से भी बड़ा है।

सभ्यता के प्रमुख स्थल

1. हड़प्पा — हड़प्पा इस सभ्यता का पहला नगर था। हड़प्पा की खुदाई दयाराम साहनी के द्वारा 1921 में सर जान मार्शल के नेतृत्व में की गयी। सर जॉन मार्शल उस समय भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक थे। हड़प्पा लाहौर से 40 किमी दूर पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रांत के मांटगोमरी जिले के रावी नदी के बायें किनारे पर स्थित है। हड़प्पा सिन्धु घाटी सभ्यता की राजधानी नगरी थी। यहां से इटों के वृत्ताकार चबूतरे, छः अन्नागार एक कतार में, श्रमिक आवास, मातृदेवी (योनी के रूप में) पूजन, कब्र, जीवाश्म, चित्रित मृदभाड़, तांबे का दर्पण, श्रृंगार बाक्स तथा पांसा प्राप्त हुआ है। जो इस बात का प्रतीक है कि इस सभ्यता के लोग कृषि के माध्यम से अनाज का उत्पादन किया करते थे। शवों को जलाने की व्यवस्था नहीं थी उन्हें दफनाया जाता था। चित्रित मृदभाड़ से यह पता चलता है कि ये लोग कला प्रेमी थे साथ ही तांबे का दर्पण एवं श्रृंगार बाँक्स बताता है कि ये श्रृंगार प्रेमी भी थे। मनोरंजन के लिए जुआ खेलते थे जिस हेतु पांसे का उपयोग किया जाता था।

2. मोहन जोदड़ो — मोहन जोदड़ो का शाब्दिक अर्थ मृतको का टीला होता है। यह सिन्धु घाटी सभ्यता का दूसरा प्रमुख नगर था। यह हड़प्पा से 400 किमी दक्षिण पश्चिम में कराची के निकट सिन्धु नदी के किनारे पर लरकाना जिला (सिन्ध प्रांत के) में स्थित है। इसकी खुदाई सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में राखलदास बनर्जी द्वारा 1922 में की गई। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो को सिन्धु घाटी सभ्यता के जुड़वा नगर कहते हैं। यहां से स्नानागार, अन्नागार, कांसे की नग्न नर्तकी प्रतिमा, कुम्हार की भट्टियां, सूती कपड़ा, दाढ़ी वाला व्यक्ति, पशुपति शिव की मुहर प्राप्त हुई है। यहां से प्राप्त एक मुद्रा पर एक आकृति मिली है जिसमें आधा भाग मनुष्य तथा आधा भाग बाघ का है। मोहनजोदड़ो का सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल स्नानागार है जिसका जलाशय दुर्ग के टीले में है। 11.88 मी. लम्बे 7.01 मी. चौड़े तथा 2.43 मी. गहरे इस जलाशय में पक्की ईंटों का उपयोग किया गया है। जिन्हे जोड़ने के लिए जिप्सम प्रयोग में

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

11. राखीगढ़ी — यह स्थल भारत के हरियाणा प्रान्त के हिसार जिले में घग्घर नदी के तट पर स्थित है यह भारत में सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है जबकि मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।

सिन्धु घाटी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषतायें

- 1. व्यवस्थित नगर नियोजन** — मकान एक लाईन में थे तथा सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। भूमिगत जल निकास प्रणाली थी। चन्दुदड़ो को छोड़कर सभी नगर किलेबंद थे।
- 2. कृषि** — सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों को विकसित कृषि का ज्ञान था। ये लोग खेतों में हल का उपयोग करते थे गेहूँ, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों, चावल, कपास आदि इनके द्वारा उत्पादित प्रमुख फसले थी। सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग कपास के ज्ञान रखने वाले दुनिया के पहले व्यक्ति थे। वे केवल कपास का उत्पादन ही नहीं करते थे, बल्कि वे धागों व कपड़ों का निर्माण भी करते थे।
- 3. पशुपालन** — इस सभ्यता के लोगों को भेड़, बकरी, बैल, भैंस, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, हिरन, कछुआ, हाथी, चीता, ऊँट, गेड़ा आदि की जानकारी थी। कुबड़ वाला सांड इनका सबसे प्रिय पशु था।
- 4. विदेशी व्यापार** — इस सभ्यता के लोग का व्यापार एवं वाणिज्य उन्नत अवस्था में था इसकी पुष्टि हड़प्पा मोहन जोदड़ो एवं लोथल से प्राप्त अन्नागारों से होती है। व्यापार के लिए इस सभ्यता के लोग मोहरों का इस्तेमाल किया करते थे। इस सभ्यता के लोग सोना कर्नाटक की कोलार की खानों से, ताँबा खेतड़ी राजस्थान की खानों से तथा टिन अफगानिस्तान से प्राप्त करते थे। मेसोपोटामिया के अभिलेखों में मेलुहा शब्द का उपयोग सिंधु घाटी क्षेत्र के लिए किया गया है।

इस सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इस सभ्यता के लोग लोहा नहीं जानते थे। आर्यों ने हड़प्पा के लिये हरियूपिया शब्द का उपयोग किया। ग्रीक लोगों ने हड़प्पावासियों के लिए सिंडन शब्द का उपयोग किया है। सिंडन शब्द का प्रयोग कपास के लिये किया जाता था। सिक्कों के कोई प्रमाण नहीं मिला। इससे यह पता चलता है कि यह लोग वस्तु विनिमय से व्यापार करते थे। राजनीति कैसी होती थी इसके कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं।

हड़प्पा के मृदभाड़

इस समय चॉक से निर्मित मृदभाड़ों का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता था। इन मृदभाड़ों को आग में पकाने के बाद गाढ़ी लाल चिकनी मिट्टी पर काले रंग के चित्र उकेरे जाते थे। इसलिए इन्हे चित्रित मृदभाड़ के नाम से जाना जाता है।

मापतौल

हड़प्पा में मापतौल का उपयोग आमतौर पर व्यवसायिक उद्देश्य से किया जाता था। इस काल के लोग मापन में 16 या उसके आर्वतकों जैसे 32, 64, इत्यादि का उपयोग किया करते थे। माप के लिए मिट्टी व पत्थर के बने घनाकार, बेलनाकार व शंक्वाकार बाटों का उपयोग होता था।

धार्मिक स्थिति

इस सभ्यता के लोग मातृदेवी एवं उर्वरा की उपासना किया करते थे। इनका धार्मिक दृष्टिकोण लौकिक तथा व्यावहारिक था। इस सभ्यता में कहीं भी मंदिर व मूर्तिपूजा का अवशेष नहीं मिला। इस सभ्यता के विभिन्न स्थलों से ताबीज प्राप्त हुआ है जिससे यह पता चलता है कि इस सभ्यता के लोग जादू टोने में विश्वास रखते थे।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

सिंधु सभ्यता के पतन के पश्चात भारत के भौगोलिक धरातल पर एक नवीन संस्कृति का उद्भव हुआ। जो अपनी पूर्ववर्ती सिंधु घाटी सभ्यता से पूर्णतः भिन्न थी। सिंधु घाटी की नगरीय सभ्यता के विपरीत यह एक पूर्णरूपेण ग्रामीण सभ्यता थी। इस सभ्यता के लोग कृषि के बजाय पशुपालन का व्यवसाय किया करते थे इस सभ्यता के संस्थापक आर्य थे जिन्होंने कई वेदों की रचना की थी। इसलिए इस सभ्यता को आर्य सभ्यता या वैदिक सभ्यता के नाम से जानते हैं। आर्य का विलोम अनार्य होता है जिसका तद्भव अनाड़ी अर्थात् अज्ञानी होता है। इससे यह ज्ञात होता है कि आर्य का शाब्दिक अर्थ ज्ञानी या श्रेष्ठ या उत्कृष्ट है।

आर्य लोग संस्कृत भाषा बोलते थे। मैक्समूलर ने आर्यों को एक भाषायी समूह कहा है। मैक्समूलर के अनुसार आर्यों का भारत में आगमन 1500 ई. पू. के आसपास में हुआ उनका मानना है कि आर्य मध्य एशिया और ईरान के क्षेत्रों से भारत आये। यही कारण है कि ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रन्थ अवेस्ता ऋग्वेद से काफी मिलता जुलता है। मध्य एशिया के देश तुर्की में स्थित बोघझकोई नामक स्थल से आर्यों का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है। जिसमें आर्यों के चार वैदिक देवताओं इन्द्र वरुण मित्र और नासत्य के बारे में लिखा गया है। बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्य उत्तरी ध्रुव प्रदेश से भारत आये जबकि स्वामी दयानंद सरस्वती आर्यों को तिब्बत का मूल निवासी मानते हैं। पंडित लक्ष्मीधर शास्त्री का मानना है कि आर्य हिमालय क्षेत्र के निवासी थे। सर विलियम जोन्स आर्यों को यूरोप का निवासी मानते हैं।

आर्यों का प्रारंभिक निवास स्थान — आरंभ में आर्यों का निवास सप्त सैन्धव क्षेत्र (सात नदियों का क्षेत्र) माना जाता है। आर्य जब सतलुज और यमुना नदी के क्षेत्र में बसे तो इस क्षेत्र को उन्होंने ब्रम्हावर्त का नाम रखा। धीरे-धीरे वे गंगा यमुना दोआब में फैल गये तब उन्होंने इस क्षेत्र का नाम ब्रह्मर्षि देश रखा। पंडित गंगानाथ झा का मानना है कि आर्य ब्रह्मर्षि देश के मूल निवासी थे जब आर्यों का विस्तार हिमालय से विंध्याचल तक हो गया तो उन्होंने इस क्षेत्र को मध्य देश कहा। जब आर्य संपूर्ण उत्तर भारत में फैल गये तो इस क्षेत्र को उन्होंने आर्यावर्त की संज्ञा दी।

आर्य कालीन प्रमुख नदियां

आर्य कालीन प्रमुख नदियां सिन्धु, झेलम (वितस्ता), चिनाव (अशिकनी), रावी (परुष्णी), व्यास (विपाशा), सतलुज (शतुद्री), गोमती (गोमल), कुरम्मा (कुरमू), घग्घर (दृशद्वति) तथा सरस्वती थी, आर्यों के लिये सरस्वती नदी सबसे पवित्र नदी थी। ऋग्वेद में सरस्वती को नदीतमा कहा गया है तथा इसके प्रवाह क्षेत्र को देव क्षेत्र की संज्ञा दी गई है। ऋग्वेद में सिंधु नदी की चर्चा सबसे अधिक बार की गई है। ऋग्वेद में गंगा नदी का उल्लेख एक बार और यमुना नदी का उल्लेख तीन बार हुआ है।

दशराज्ञ युद्ध

दशराज्ञ युद्ध रावी अर्थात् परुष्णी नदी के किनारे पर लड़ा गया, इसे दस राजाओं का युद्ध भी कहते हैं। यह युद्ध दस राजाओं के एक संघ के द्वारा भरत कबीले के मुखिया सुदास के विरुद्ध लड़ा गया। सुदास ने इस युद्ध में दस राजाओं के इस संघ को हरा दिया। कालांतर में दस राजाओं के इस संघ तथा भरत कबीले का आपस में संयोजन हो गया। इन्होंने जुड़कर कुरु कबीला बना लिया। वे गंगा, यमुना, दोआब की ओर बढ़ गये जिससे यह क्षेत्र कुरुक्षेत्र कहलाया। दस राजाओं के संघ के पुरोहित के विश्वामित्र तथा भरत कबीले के मुख्य पुरोहित वशिष्ठ थे। इन दस राजाओं में पांच राजा आर्य तथा पांच अनार्य थे। पांच आर्य राजाओं के कबीले— पुरु, यदु, तुर्वस, द्रुह्य, एवं अणु तथा पांच अनार्य राजाओं के कबीले — अकीन्न, पक्थ, भलानश, विशाणी, एवं शिवि थे।

आर्यों की राजनीतिक व्यवस्था

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

ऋग्वेद, यजुर्वेद, एवं सामवेद को सम्मिलित रूप से वेदत्रयी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि वेदों की रचना ईश्वर के द्वारा की गई इसलिए इन्हे अपौरुषेय भी कहा जाता है।

विलिप्त वेदों को समझ में आने योग्य बनाने हेतु वेदांगों का विकास किया गया। जिनमें शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, कल्प व ज्योतिष को शामिल किया जाता है। वेदांगों के अध्ययन के बिना वेदों को समझना मुश्किल है। वेदांगों का अध्ययन करने का बाद वेदों को समझना आसान हो गया। इस प्रकार ब्राह्मण साहित्य अस्तित्व में आया। ब्राह्मण साहित्यों को वेदों का सरल भाषा में अनुवाद भी कहा जा सकता है। एतरेय तथा कौशितकी ऋग्वेद के ब्राह्मण, पंचविश, छन्दोग्य, षणविश तथा जैमिनीय सामवेद के ब्राह्मण तेतरेय तथा शतपथ, यजुर्वेद के ब्राह्मण एवं गोपथ अथर्ववेद का ब्राह्मण है। जब वेदों को समझा जाने लगा तब यह सवाल उठा कि आखिर ज्ञान का महत्व क्या है? ज्ञान क्यों प्राप्त किया जाये? ज्ञान की उपयोगिता क्या है? ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य क्या होना चाहिए – भौतिक अथवा आध्यात्मिक? इस पर भिन्न भिन्न विचार विद्वानों ने अपने तरीके से रखे जिससे भारतीय दर्शन का विकास हुआ। भारतीय दर्शन के कुल 9 संप्रदाय विकसित हुए। जिनमें से 6 सम्प्रदाय ऐसे थे जिनका मानना था कि ज्ञान प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक अर्थात् आत्मा (स्वयं), प्रकृति एवं ईश्वर के मध्य संबंध को समझने के लिए क्षमता विकसित करना होता है। इन 6 दर्शनों को षडर्शन के नाम से जाना जाता है। इनमें सांख्य दर्शन – कपिल मुनि, योग दर्शन – पतंजलि, न्याय दर्शन – गौतम, वैशेषिक दर्शन – उल्का कणाद, पूर्व मीमांसा – जेमिनि, उत्तर मीमांसा – वादरायण के द्वारा विकसित किया गया जबकि तीन दर्शन जिनमें चारवाक दर्शन बौद्ध दर्शन तथा जैन दर्शन का मानना है कि ज्ञान प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य भौतिक विकास होना चाहिए। ये तीनों दर्शन वेदों के ज्ञान को ज्ञान का मूल स्रोत नहीं मानते हैं।

वेद

वेदों की कुल संख्या चार है। 1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद

1. **ऋग्वेद** – यह श्लोकों का संकलन है। इसमें 1028 श्लोक हैं, इन्हे सुक्तियाँ भी कहा जाता है। यह 10 भागों में बंटा हुआ है, प्रत्येक भाग को मंडल कहते हैं। 2 से 7 तक मंडल प्राचीन है जबकि 1, 8, 9, 10 मंडल नवीन मंडल है। दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में चतुर्वर्ण का वर्णन किया गया है। ऋग्वेद का पाठ करने वाले विद्वान को होता या होत्री कहा जाता है। ऋग्वेद के तीसरे मंडल में गायत्री महामंत्र का उल्लेख है यह सूर्य की पत्नी सावित्री को समर्पित है। इसकी भाषा पद्यात्मक है। लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, जैसी महिलाओं ने भी ऋग्वेद के मंत्रों की रचना की है।

2. **सामवेद** – यह यज्ञों के अवसर गाये जाने वाले गीतों का संकलन है। इसमें 1875 सुक्त हैं। जिनमें से 75 को छोड़कर शेष ऋग्वेद से लिये गये हैं। सामवेद का प्रथम दृष्टा वे व्यास के शिष्य जेमिनी को माना जाता है। जिन्हे यज्ञों के अवसर पर गाया जाता था। इसे भारतीय संगीत का जनक कहते हैं। इसका संकलन करने वाले ऋषियों को उदगात्री कहा जाता था।

3. **यजुर्वेद** – इसमें विभिन्न यज्ञों की करने की विधि बताई गई है। इसमें 40 मण्डल तथा 2000 श्लोक हैं यह दो भागों में बंटा हुआ है 1. शुक्ल यजुर्वेद 2. कृष्ण यजुर्वेद। यह वेद गद्य-पद्य दोनों में है। इस वेद में ही सबसे पहले दो राजसी कर्मकाण्डो, राजसूय तथा वाजपेय यज्ञों का वर्णन किया गया। इसे भारतीय ज्यामिति का जनक माना जाता है। इसके पाठन करने वाले को अध्वर्यु कहा जाता है।

4. **अथर्ववेद** – इसकी रचना अथर्वा नामक ऋषि ने की थी। इसकी दो शाखायें शौनक तथा पिप्लाद हैं। इसे ब्रह्मवेद या महीवेद भी कहा जाता है। इसमें वास्तुशास्त्र का बहुमूल्य ज्ञान उपलब्ध है। इसका सर्वाधिक उल्लेखनीय खंड आर्युविज्ञान है। इसमें 20 मण्डल 731

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

स्मृति – आचार संहिता जो समाज में मनुष्य के व्यवहारों का नियमन करती है। कुल 6 स्मृतियाँ प्रसिद्ध हैं। सबसे अधिक स्मृतियों की रचना गुप्त काल में की गई इसलिये गुप्तकाल को स्मृति काल भी कहते हैं।

| स्मृति | काल |
|--------------------|--|
| मनुस्मृति | सबसे प्राचीन (इनकी रचना पूर्व गुप्त काल में की गई) इसके रचयिता मनु थे। इसे मानव-धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया। इसके बाद के धर्मग्रन्थकारों ने मनुस्मृति को एक सन्दर्भ के रूप में स्वीकारते हुए इसका अनुसरण किया है। |
| याज्ञवल्क्य स्मृति | याज्ञवल्क्य स्मृति को अपने तरह की सबसे अच्छी एवं व्यवस्थित रचना माना जाता है। इसकी विषय-निरूपण-पद्धति अत्यंत सुग्रथित है। इस पर विरचित मिताक्षरा टीका हिंदू धर्मशास्त्र के विषय में भारतीय न्यायालयों में प्रमाण मानी जाती रही है। इसके श्लोक अनुष्टुप छंद में हैं – इसी छंद में गीता, वाल्मीकि रामायण और मनुस्मृति लिखी गई है। इसी विषय (यानि धर्मशास्त्र) पर मनुस्मृति को आधुनिक भारत में अधिक मान्यता मिली है। इसमें आचरण, व्यवहार और प्रायश्चित के तीन अलग अलग भाग हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में ही सर्वप्रथम महिलाओं के सम्पत्ति के अधिकार का प्रयोग किया गया |
| नारद स्मृति | यह पुस्तक विशुद्ध रूप से न्यायिक है यह दंड की प्रक्रिया और कानून पर केंद्रित है। |

पुराण – पुराणों की कुल संख्या अठारह हैं।

| ब्रह्म पुराण | पद्म पुराण | विष्णु पुराण | भागवत पुराण– (देवीभागवत पुराण) | ब्रह्माण्ड पुराण |
|--------------|------------------|--------------|--------------------------------|------------------|
| नारद पुराण | मार्कण्डेय पुराण | अग्नि पुराण | ब्रह्म वैवर्त पुराण | लिंग पुराण |
| वाराह पुराण | स्कन्द पुराण | वामन पुराण | मत्स्य पुराण | गरुड़ पुराण |

मत्स्य पुराण सबसे प्राचीन पुराण है।

उपनिषद्

उपनिषद् शब्द का साधारण अर्थ है – 'समीप उपवेशन' या 'समीप बैठना (ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य का गुरु के पास बैठना)। यह शब्द 'उप', 'नि' उपसर्ग तथा, 'सद्' धातु से निष्पन्न हुआ है। सद् धातु के तीन अर्थ हैं: विवरण-नाश होना; गति-पाना या जानना तथा अवसादन-शिथिल होना। उपनिषद् में ऋषि और शिष्य के बीच बहुत सुन्दर और गूढ़ संवाद है जो पाठक को वेद के मर्म तक पहुंचाता है।

उपनिषद् भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूलाधार है, भारतीय आध्यात्मिक दर्शन स्रोत हैं। वे ब्रह्मविद्या हैं। जिज्ञासाओं के ऋषियों द्वारा खोजे हुए उत्तर हैं। वे चिंतनशील ऋषियों की ज्ञान चर्चाओं का सार हैं। वे कवि-हृदय ऋषियों की काव्यमय आध्यात्मिक रचनाएँ हैं,

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

| | | |
|---------------|----------------|---|
| | | दर्शन है। यह एक अनीश्वरवादी दर्शन है जो श्रृष्टि के उद्भव विकास के लिए प्रकृति को उत्तरदायी मानता है। सांख्य का अर्थ सम आख्या यानि समान व्याख्या से है। इसमें प्रकृति और श्रृष्टि को एक समान माना गया है। यह ईश्वर को तो नहीं मानता लेकिन वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करता है। इस दर्शन के अनुसार पुरुष तथा प्रकृति श्रृष्टि के दो मुख्य तत्व हैं। इसलिए इस दर्शन को द्वैतवादी दर्शन भी कहा जाता है। इस दर्शन के अनुसार प्रकृति के तीन गुण— सत् (श्रेष्ठता का प्रतीक), रज (चंचलता का प्रतीक), तथा तम (आलस्य का प्रतीक) होते हैं। ये तीनों ही गुण साम्यवस्था में रहते हैं परन्तु पुरुष के संपर्क में आने के पश्चात् ये सक्रिय हो जाते हैं और श्रृष्टि का निर्माण आरंभ होता है। |
| योग दर्शन | महर्षि पतंजलि | इस दर्शन को सांख्य दर्शन का पूरक दर्शन भी कहा जाता है क्योंकि यह दर्शन सांख्य दर्शन की अनेक मान्यताओं को स्वीकार करता है। इस दर्शन का मानना है कि मानसिक, बौद्धिक एवं शारीरिक शक्तियों के योग से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। योग के आठ अंग होते हैं — 1. यम (अर्थात् मन और वाणी का संयम), यम पांच प्रकार का होता है अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह। 2. नियम (सदगुणों का अभ्यास), नियम भी पांच प्रकार का होता है — शौच, संतोष, तप, स्वअध्याय तथा ईश्वर का ध्यान। 3. आसन (शरीर का संयम), शरीर को सुख पूर्वक एक ही स्थिति में लम्बे समय तक बैठाये रखने का अभ्यास आसन है। 4. प्राणायाम (प्राणवायु का अभ्यास), इसके तीन भाग हैं — सांस को अंदर रोकना (पूरक), सांस को बाहर निकालना (रेचक) और सांस तथा प्रश्वास की गति को रोकना (कुंभक)। 5. प्रत्याहार (इंद्रियों का संयम)। 6. धारणा (किसी वस्तु विशेष पर ध्यान केन्द्रित करना) 7. ध्यान (धारणा का परिणाम है इसके अंतर्गत लक्ष्य का निरंतर मनन किया जाता है।) और 8. समाधि (ध्यान के विषय पर दीर्घ काल तक एकाग्रता स्थापित करना समाधि कहलाती है।) |
| न्याय दर्शन | महर्षि गौतम | न्याय दर्शन का मानना है कि प्रमाणों की सहायता से ही यर्थात् ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। |
| वैशेषिक दर्शन | महर्षि कणाद | महर्षि कणाद का वास्तविक नाम उलुक था। इसलिए इनके दर्शन को औलक्य दर्शन के नाम से भी जानते हैं। इस दर्शन में सात विशेष पदार्थों से श्रृष्टि की रचना की बात मानी गयी है। इसलिए इसे वैशेषिक दर्शन कहते हैं। यह दर्शन मानता है कि भौतिक जगत का निर्माण परमाणुओं से हुआ है। |
| पूर्व मीमांसा | महर्षि जेमनि | मीमांसा दर्शन पूर्णतः वेदों पर आधारित है मीमांसा का सामान्य अर्थ है विचार करना। यह दर्शन वेदों का विश्लेषण करता है। |
| उत्तर-मीमांसा | महर्षि वादरायण | यह भारतीय दर्शन का चरम उत्कर्ष माना जाता है इसे वेदांत दर्शन भी कहते हैं। वेदांत का आशय है वेदों का अंतिम भाग। इसके रचयिता महर्षि वादरायण को |

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

स्मृतियों में चारों आश्रमों के कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। मनु ने मानव आयु सामान्यतः एक सौ वर्ष की मानकर उसको चार बराबर भागों में बांटा है। प्रथम चतुर्थांश ब्रह्मचर्य है। इस आश्रम में गुरुकुल में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करना कर्तव्य है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्या का उपार्जन और व्रत का अनुष्ठान है। मनु ने ब्रह्मचारी के जीवन और उसके कर्तव्यों का वर्णन विस्तार के साथ किया। ब्रह्मचर्य उपनयन संस्कार के साथ प्रारंभ और समावर्तन के साथ समाप्त होता है। इसके पश्चात विवाह करके मुन्य्य दूसरे आश्रम गृहस्थ में प्रवेश करता है। गृहस्थ समाज का आधार स्तंभ है। जिस प्रकार वायु के आश्रम से सभी प्राणी जीते हैं उसी प्रकार गृहस्थ आश्रम के सहारे अन्य सभी आश्रम वर्तमान रहते हैं। इस आश्रम में मनुष्य ऋषिऋण से वेद से स्वाध्याय द्वारा, देवऋण से यज्ञ द्वारा और पितृऋण से संतानोत्पत्ति द्वारा मुक्त होता है। इसी प्रकार नित्य पंचमहायज्ञों—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा भूतयज्ञ—के अनुष्ठान द्वारा वह समाज एवं संसार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है। आयु का दूसरा चतुर्थांश गृहस्थ में बिताकर मनुष्य जब देखता है कि उसके सिर के बाल सफेद हो रहे हैं और उसके शरीर पर झुर्रियाँ पड़ रही हैं तब वह जीवन के तीसरे आश्रम—वानप्रस्थ—में प्रवेश करता है। निवृत्ति मार्ग का यह प्रथम चरण है। इसमें त्याग का आंशिक पालन होता है। वानप्रस्थ के अनंतर शांतचित्त, परिपक्व वयवाले मनुष्य का संन्यास प्रारंभ होता है। एक आश्रम से दूसरे आश्रम में जाकर, जितेंद्रिय हो, भिक्षा (ब्रह्मचर्य), बलिवैश्वदेव (गार्हस्थ्य तथा वानप्रस्थ) आदि से विश्राम पाकर जो संन्यास ग्रहण करता है वह मृत्यु के उपरांत मोक्ष प्राप्त कर अपनी (पारमार्थिक) परम उन्नति करता है।

आश्रमव्यवस्था का जहाँ शारीरिक और सामाजिक आधार है, वहाँ उसका आध्यात्मिक अथवा दार्शनिक आधार भी है। भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन को केवल प्रवाह न मानकर उसको सोद्देश्य माना था और उसका ध्येय तथा गंतव्य निश्चित किया था। जीवन को सार्थक बनाने के लिए उन्होंने चार पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—की कल्पना की थी। प्रथम तीन पुरुषार्थ साधनरूप से तथा अंतिम साध्यरूप से व्यवस्थित था। मोक्ष परम पुरुषार्थ, अर्थात् जीवन का अंतिम लक्ष्य था, किंतु वह अकस्मात् अथवा कल्पनामात्र से नहीं प्राप्त हो सकता है। उसके लिए साधना द्वारा क्रमशः जीवन का विकास और परिपक्वता आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय समाजशास्त्रियों ने आश्रम संस्था की व्यवस्था की। आश्रम वास्तव में जीव का शिक्षणालय अथवा विद्यालय है। ब्रह्मचर्य आश्रम में धर्म का एकांत पालन होता है। ब्रह्मचारी पुष्टशरीर, बलिष्ठबुद्धि, शांतमन, शील, श्रद्धा और विनय के साथ युगों से उपार्जित ज्ञान, शास्त्र, विद्या तथा अनुभव को प्राप्त करता है।

विवाह

वैदिक काल में एक विवाह को सर्वोत्तम माना जाता था परन्तु बहु विवाह अर्थात् एक से ज्यादा पत्नी का होना सामान्य बात होती थी।

विवाह के प्रकार

वैदिक काल में आठ प्रकार के विवाह प्रचलित थे। परन्तु समाज द्वारा कुल चार के प्रकार के विवाह की ही अनुमति थी।

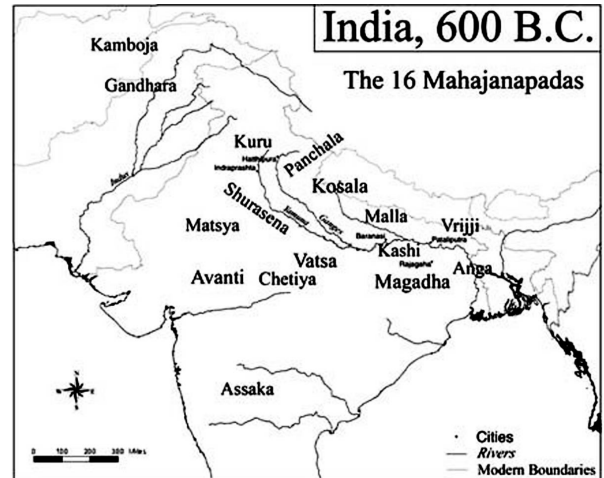
1. **ब्रम्ह विवाह** — यह सबसे प्रचलित विवाह का प्रकार था। इसमें लड़की के पिता सुयोग्य वर का चयन करते थे और उसका विवाह अग्नि को साक्षी मानकर किया जाता था। ब्राम्हण मंत्रों का उच्चारण करते थे और रिश्तेदार नवविवाहित जोड़े को उपहार प्रदान किया करते थे। यह आज भी प्रचलन में है।
2. **प्रजापत्य विवाह** — यह एक साधारण प्रकार का विवाह होता था जिसमें लड़की के पिता अपनी पुत्री का हाथ वर के हाथ में आशीर्वाद के साथ सौंप देता था, इस विवाह में दहेज का प्रावधान नहीं होता था।
3. **आर्ष विवाह** — इस विवाह के प्रकार में सन्यासी (जो ब्रह्मचर्य का आजीवन पालन) लड़की के पिता को एक जोड़ी बैल प्रदान करता था, जो विवाह का प्रस्ताव माना जाता था।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

छठी शताब्दी ई. पू. की राजनैतिक स्थिति

छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक भारत में काफी राजनैतिक प्रगति हुई। संपूर्ण उत्तर भारत में कई शक्तिशाली महाजनपदों का उदय हुआ। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि वैदिक काल के जन विकसित होकर महाजनपद बन गये। इस राजनैतिक विकास के लिए लोहे का ज्ञान एवं उसका उपयोग मूल रूप से उत्तरदायी कारक माना जाता है। लोहे का ज्ञान होने से कृषि कार्य में भारी प्रगति देखने को मिली फलस्वरूप लोगों के जीवन में स्थिरता एवं समृद्धि आयी। जिसके फलस्वरूप राजनैतिक विकास हुआ एवं जनों का रूपांतरण महा जनपदों में हो गया।

प्रारंभिक बुद्ध और जैन किताबों में 16 महाजनपदों के नाम का वर्णन प्राप्त होता है अपितु कुछ नामों में असमानता पाई जाती है लेकिन वज्जी मगध, कौशल, कुरु, पांचाल, गंधार, और अवन्ती का नाम प्रायः देखने को मिलता है। जिससे यह स्पष्ट है कि ये जनपद उस काल के अत्यंत प्रभावशाली जनपद हुआ करते थे। प्रायः महाजनपद अनुवांशिक राजाओं द्वारा शासित किया जाता था परन्तु कुछ महाजनपद गणराज्य के रूप में विद्यमान थे जिन्हे संघ के नाम से जाना जाता था। ऐसे महाजनपदों में वज्जी और लिच्छवी महासंघ का नाम उल्लेखनीय है। हर महाजनपद की एक राजधानी हुआ करती थी जो पूर्णतः किलेबंद होती थी।



| महाजनपद | राजधानी | स्थिति |
|----------|---------------------------|---|
| मगध | राजगीर और पाटलीपुत्र | आधुनिक पटना |
| अंग | चम्पा | पूर्वी बिहार |
| वज्जी | वैशाली | उत्तरी बिहार |
| मल्ल | कुशीनगर | पूर्वी उत्तर प्रदेश |
| काशी | बनारस | आधुनिक वाराणसी |
| वत्स | कौशाम्बी | इलाहाबाद व उसके आस पास का क्षेत्र |
| पांचाल | कांपिल्य | बरेली व रामपुर उत्तरप्रदेश |
| कुरु | हस्तिनापुर | मेरठ व सहारनपुर उत्तरप्रदेश |
| कौशल | अयोध्या, श्रावस्ती | अयोध्या व बहराईच उत्तरप्रदेश |
| सूरसेन | मथुरा | मथुरा व अलीगढ़ उत्तरप्रदेश |
| मत्स्य | विराट नगर | जयपुर व उसके आस पास का क्षेत्र राजस्थान |
| चेदी | शुक्तिमति वर्तमान खजुराहो | बुन्देलखण्ड मध्यप्रदेश |
| अवन्तिका | महिष्मति | उज्जैन मध्यप्रदेश |
| अष्मक | प्रतिष्ठानपुर | महाराष्ट्र |
| गंधार | तक्षशिला | पाकिस्तान |

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

मगध का उदय

मगध महाजनपद वर्तमान बिहार में स्थित है। मगध 16 महाजनपदों में सबसे शक्तिशाली महाजनपद था। जिसके लिये कई कारक उत्तरदायी थे। प्राचीन काल से ही यह भूमि अपने उपजाऊपन के लिए जानी जाती है। जिससे इस क्षेत्र में कृषि के विकास को बल मिला। साथ ही कई नदियों के इस क्षेत्र से बहने के कारण सिंचाई के पर्याप्त साधन उपलब्ध थे। फलस्वरूप मगध को भू-राजस्व के रूप में पर्याप्त वित्त प्राप्त होता था। मगध क्षेत्र लौह अयस्क के लिए भी जाना जाता है। आज भी इसी क्षेत्र में लोहे के पर्याप्त भण्डार उपलब्ध हैं। यह वह समय था जब लोहे का महत्व आज के सोने के बराबर था लोहे का उपयोग दैनिक जीवन के साथ साथ कृषि एवं सैन्य उपकरणों के लिए किया जाता था। जिस राज्य क्षेत्र में जितना अधिक लोहा मौजूद हो वह राज्य क्षेत्र उतना ताकतवर होता था। मगध के शक्तिशाली होने के पीछे मगध की राजधानी राजगृह की अवस्थिति भी एक महत्वपूर्ण कारक थी यह एक उंचे पर्वत पर स्थित थी। जो राजा को शत्रुओं से बचाती थी तथा राज्यक्षेत्र को सामरिक लाभ प्रदान करती थी। मगध के शक्तिशाली होने में बिम्बिसार, अजातशत्रु, महापद्मनंद तथा चंद्रगुप्त जैसे दूरदर्शी एवं कुशल शासकों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

हर्यक वंश (544–413 ई. पू.)

हर्यक वंश मगध महाजनपद का प्रथम ज्ञात वंश है। हर्यक वंश की स्थापना 544 ई. पू. में बिम्बिसार के द्वारा की गई। इसके साथ ही राजनीतिक शक्ति के रूप में मगध का सर्वप्रथम उदय हुआ। बिम्बिसार को मगध साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। बिम्बिसार ने गिरिव्रज (राजगृह) को अपनी राजधानी बनायी। इसने वैवाहिक सम्बन्धों (कौशल, वैशाली एवं पंजाब) की नीति अपनाकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

बिम्बिसार (544–492 ई. पू.)

बिम्बिसार को हर्यक वंश का संस्थापक कहा जाता है। वह महात्मा बुद्ध का समकालीन था। जब अवन्ति के शासक प्रद्योत पीलिया की बीमारी से पीड़ित थे तो बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को उपचार के लिये भेजा। बिम्बिसार को सेनिया के नाम से जाना जाता है, क्योंकि वह भारत का पहला राजा था जिसने अपनी नियमित सेना बनाई। उसने अपनी विवाह की नीति के माध्यम से कश्मीर और कौशल पर कब्जा कर लिया। बिम्बिसार ने पहला विवाह कौशल राज की पुत्री व प्रसेनजित की बहन कौशलादेवी से, दूसरा विवाह वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी चेलना से तथा तीसरा विवाह पंजाब के मद्रकुल की राजकुमारी खेमा से किया। इसने राजगृह नामक नगर बसाया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया।

अजातशत्रु (492–460 ई. पू.)

अपने पिता बिम्बिसार को मार कर अजातशत्रु ने गद्दी प्राप्त की। यही कारण है कि उसे पितृहन्ता भी कहते हैं। उसकी सबसे महत्वपूर्ण विजय वज्जी को जीतना था। उसने वज्जी के साथ 16 वर्षों तक युद्ध किया इसी युद्ध में उसने रथ मूसल तथा महाशिला कटक नामक हथियारों का प्रयोग किया। रथ मूसल एक विशेष प्रकार का रथ था जिसके पहिए में लोहे के कांटे लगे होते थे। महाशिला कटक का उपयोग शत्रु सेना पर बड़े-बड़े पत्थर फेंकने के लिए किया जाता था। उसने राजगृह के किले का निर्माण करवाया। इसके काल में राजगृह में 483 ई. पू. में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया। इस संगीति में महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को दो भागों में बांटा गया— 1. सुत पिटक 2. विनय पिटक।

उदयिन (460–444 ई. पू.)

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

ईरानी आक्रमण के पश्चात भारत को यूनानी आक्रमण का सामना करना पड़ा। सन 326 ई. पू. में मेसिडोनिया (यूनान के समीप एक छोटा सा नगर राज्य) के शासक सिकन्दर ने हिन्दुकुश पर्वत को पार कर भारत पर आक्रमण किया। सिकन्दर खैबर दर्रे से भारत आया था। उसका पहला आक्रमण तक्षशिला के राजा आम्बि के विरुद्ध था। उसने गांधार (वर्तमान क्षेत्र में पूर्वी अफगानिस्तान और उत्तरी पाकिस्तान का क्षेत्र) के सभी प्रमुखों को आमंत्रित कर, उन्हें अपने अधिकार क्षेत्र सिकंदर के अधीन करने के लिये कहा। तक्षशिला के शासक आम्बी (ग्रीक नाम ओमफी), जिसका राज्य सिंधु नदी से झेलम नदी (हाइड्रस्पेश) तक फैला हुआ था, ने इसे स्वीकार कर लिया, सिकन्दर ने झेलम और चिनाव के बीच स्थित क्षेत्र पर आक्रमण किया यहां उसका सामना पोरस नामक शासक से हुआ। सिकंदर को पंजाब के शासक पोरस के साथ युद्ध करना पड़ा, जिसे हाइडेस्पीज के युद्ध या झेलम के युद्ध के नाम से जाना जाता है। सिकन्दर ने पोरस को पराजित किया लगभग 19 महीने भारत में रहने के बाद लौटते हुए बेबीलोन (आधुनिक ईराक एवं प्राचीन मेसोपोटामिया का एक प्रसिद्ध शहर) में 323 ई.पू. में सिकन्दर की मृत्यु हो गयी। भारत से वापस जाते समय सिकन्दर ने अपने भू भाग को तीन हिस्सों में बांट दिया तथा प्रत्येक क्षेत्र का उत्तरदायित्व यूनानी गर्वनरों के हाथों में सौंप दिया।

प्राचीन भारत के प्राचीनतम सिक्के पांचवी शताब्दी ई. पू. के प्राप्त होते हैं। इन सिक्कों को आहत सिक्के (पंच मार्क सिक्के) भी कहा जाता है। ये सिक्के मुख्यतः चांदी के होते थे। पूर्व मौर्य काल के प्रसिद्ध विद्वानों में से एक पाणिनी ने संस्कृत भाषा के व्याकरण की रचना की। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ को अष्टाध्यायी कहा जाता है।



Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

इसके पश्चात् वे सारनाथ के मृगदाव वन में गये जिसे ऋषि पत्तन – वह स्थान जहाँ पवित्र पुरुष (पाली: पेप, संस्कृत: ऋषि) उतरे के नाम से भी जाना जाता है। जहाँ उनकी मुलाकात उनके 5 पूर्व साथियों से हुई। जिन्होंने उन्होंने सत्य का अपना पहला प्रवचन दिया। जिसे धम्म चक्र प्रवर्तन के नाम से जानते हैं। वे महात्मा बुद्ध के प्रथम शिष्य बन गये 1. अश्वजीत 2. उपाली 3. मोगलायन 4. शारीपुत्र 5. आनंद (बुद्ध जी का चचेरा भाई)। इस प्रकार सारनाथ में उन्होंने अपना प्रथम संघ स्थापित किया। उन्होंने 483 ई. पू. में कुशीनगर में 80 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई, जिसे महापरिनिर्वाण कहते हैं। अपनी मृत्यु के कुछ ही समय पहले बुद्ध जी एक गरीब सुनार चन्दा की झोपड़ी में रुके थे, जहाँ विषाक्त भोजन ग्रहण करने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उनकी शिक्षाओं का प्राथमिक उद्देश्य मनुष्य को दुख से मुक्ति दिलाना था।

बौद्ध धर्म की मौलिक शिक्षा

महात्मा बुद्ध ने अपना उपदेश आम जनता की भाषा पाली में दिया। बुद्ध ने एक अत्यंत ही व्यावहारिक दर्शन का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार श्रृष्टि दुःखमय है अर्थात् यहां सभी दुखी हैं। दुःख का मूल कारण अविद्या और तृष्णा है। दुःख को दूर करने का उपाय आष्टांगिक मार्ग है। महात्मा बुद्ध ने अपने दर्शन के रूप में चार आर्य सत्य का प्रतिपादन किया। बौद्ध धर्म ईश्वर एवं आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करता लेकिन यह कर्म एवं पुर्नजन्म को मान्यता देता है। बौद्ध धर्म वेदों को ज्ञान का परम स्रोत नहीं मानता है। बौद्ध धर्म कर्म काण्डों का खंडन करता है तथा ब्रह्म की अवधारणा को अतार्किक मानता है।

चार आर्य सत्य

| | |
|---------------------------|--|
| दुख | अर्थात् सभी दुखी हैं |
| दुख दुःख समुदय | दुख ही दुख का कारण है, दुख का मूल कारण अविद्या और तृष्णा होती है। |
| दुख निरोध | दुख से मुक्ति पाई जा सकती है। |
| दुख निरोध गामिनी प्रतिपदा | दुख को दूर करने का निश्चित तरीका होता है जिससे दुख से मुक्ति पाई जा सकती है। |

महात्मा बुद्ध ने मध्यम प्रतिपदा का सिद्धांत प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार हमें हर प्रकार की अति या चरम का परित्याग करना चाहिए तथा जीवन में मध्यममार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

अष्टांगिक मार्ग

महात्मा बुद्ध के अनुसार दुःख से मुक्ति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। अष्टांगिक मार्ग के अंतर्गत सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्म, सम्यक आजीव, सम्यक प्रयत्न, सम्यक भाव व सम्यक ध्यान, को शामिल किया गया है। सम्यक से तात्पर्य संतुलित से है अर्थात् सदैव अति से बचकर संतुलन को स्वीकार करना ही सम्यक आचरण कहलाता है।

त्रिरत्न

बौद्ध धर्म के अनुसार बुद्ध संघ एवं धम्म को त्रिरत्न माना गया है। सरल भाषा में कहा जाये तो दुख से बचने के लिए मनुष्य को अपने विवेक यानि बुद्ध, संघ अर्थात् संगठन एवं धम्म अर्थात् नीतिगत आचरण का शरण लेना चाहिए।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

बौद्ध संगितियां

| | | | | |
|--|------------|-----------|----------|---------------------------------------|
| प्रथम बौद्ध संगीति | 438 ई. पू. | अजातशत्रु | महाकश्यप | राजगृह स्थित सप्तपर्णी गुफा में बिहार |
| <p>इस सम्मेलन निम्न पुस्तकों की रचना की गई –</p> <p>सुतपिटक – इसमें महात्मा बुद्ध की सुक्तियों का संग्रह आनंद के नेतृत्व में किया गया।</p> <p>विनय पिटक – इसमें बौद्ध भिक्षुओं के लिए आचार संहिता का निर्माण उपाली के निर्देशन में किया गया।</p> | | | | |

| | | | | |
|--|------------|---------|----------|-------------------------------------|
| द्वितीय बौद्ध संगीति | 388 ई. पू. | कालाशोक | सव्यकामी | वैशाली स्थित बालुकाराम विहार, बिहार |
| <p>इस सम्मेलन में बुद्ध धर्म दो सम्प्रदायों 1. स्थाविर 2. महासंधिक में विभक्त हो गया। स्थाविर रुढ़िवादी थे तथा विनय पिटक में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं चाहते थे जबकि महासंधिक विनय पिटक के नियमों में कुछ ढील देने तथा नये नियम को समर्थन देने के पक्ष में थे।</p> | | | | |

| | | | | |
|---|------------|-------------|--------------|---|
| तृतीय बौद्ध संगीति | 247 ई. पू. | सम्राट अशोक | मोगलीपुत्तिस | पाटिलीपुत्र स्थित अशोकाराम विहार, बिहार |
| <p>अभिधम्म पिटक नाम बौद्ध धर्म की तीसरी पुस्तक की रचना इस संगीति में की गई। यह बुद्ध धर्म की दार्शनिक व्याख्या है। इस संगीति को थेरवादियों (स्थाविरवादी) की संगीति कही गई। इस संगति के आयोजन के बाद अशोक ने विश्व के विभिन्न भागों में बौद्ध भिक्षुओं को धर्म प्रचार प्रसार हेतु भेजा उन्होंने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संधमित्रा को सिलोन (श्रीलंका) भेजा।</p> | | | | |

| | | | | |
|--|------------|---------------|----------|-----------------------|
| चतुर्थ बौद्ध संगीति | 102 ई. पू. | सम्राट कनिष्क | वसुमित्र | कश्मीर स्थित कुण्डलवन |
| <p>इस संगिति का मुख्य उद्देश्य हीनयानियों अर्थात् थेरवादियों और महायानियों के मध्य विवाद का निवारण करना था। परन्तु इसी संगीति में बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों – हीनयान और महायान ने विभक्त हो गया। कनिष्क ने महायान को संरक्षण प्रदान किया। यह संप्रदाय चीन, जापान, थाईलैंड, कम्बोडिया में लोकप्रिय हुआ।</p> | | | | |

स्तूप

स्तूप का शाब्दिक अर्थ ढेर लगाना होता है। प्राकृतिक भाषा में ढेर लगाने को थूप या थोपना कहते हैं इसी से स्तूप का उद्भव हुआ है। चूंकि यह चिता के स्थान पर निर्मित किया जाता था इसलिए इसे चैत्य भी कहा जान लगा। स्तूप और चैत्य में मुख्य अंतर यह है कि स्तूप समाधि होती है जबकि चैत्य बौद्ध मंदिर को कहा जाता है महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनके शव भस्म को आठ भागों में बांट कर उन पर समाधियों का निर्माण किया यही से स्तूप बनाने की परंपरा बौद्ध धर्म की विशेषता बन गयी। मौर्य काल से पूर्व महात्मा बुद्ध के शव भस्म पर बनाये गये आठ स्तूपों में से केवल एक ही स्तूप का अवशेष प्राप्त होता है यह स्तूप भारत नेपाल की सीमा पर पिपरहवा नामक स्थान पर स्थित है। स्तूप निर्माण का वास्तविक कार्य मौर्य काल से आरंभ हुआ सम्राट अशोक ने कई स्तूपों

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

बोधिसत्त्वों का संबंध बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय से है। बोधिसत्त्व का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने निर्वाण अर्थात् बोध प्राप्त कर लिया हो। बौद्ध धर्म में निम्नलिखित बोधिसत्त्वों की कल्पना की गई है।

| | |
|--------------|--|
| मंजूश्री | इनका मुख्य कार्य बुद्धि को प्रखर करना है। |
| वज्रपाणि | इन्हे पाप और असत्य का शत्रु माना जाता है। |
| क्षितिगर्भ | यह शुद्धि के प्रतीक माने जाते हैं। |
| अवलोकितेश्वर | इन्हे पद्मपाणि के नाम से भी जाना जाता है। इन्हे विश्व का रक्षक भी कहा जाता है। |
| मैत्रेय | यह भावी बोधिसत्त्व है जिनका अवतार अभी बाकी है। |

जैन धर्म

जैन परम्परा के अनुसार जैन धर्म के 24 तीर्थंकर थे। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव तथा 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। ऋषभनाथ और अरिष्टनेमी का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। ऐतिहासिक साहित्यों में अंतिम दो ही तीर्थंकरों के साक्ष्य मिलते हैं – 1. पार्श्वनाथ 2. महावीर स्वामी। पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे। उन्होंने सत्य की खोज में राज त्याग दिया और अपना जीवन झारखण्ड के हजारीबाग जिले के सम्मेद शिखर पर बिताया इस शिखर को पारसनाथ शिखर भी कहते हैं। इन्होंने अपने अनुयायियों को चतुर्ध्याम शिक्षा या चार आचरण का पालन करने को कहा – 1. अहिंसा (हिंसा न करना) 2. अस्तेय (चोरी न करना) 3. अपरिग्रह (संचय न करना) 4. सत्य। महावीर स्वामी ने इन चार शिक्षाओं को स्वीकार किया तथा पांचवीं शिक्षा के रूप में ब्रम्हचर्य को और जोड़ दिया। इस प्रकार यह जैन धर्म का पंच महाव्रत बन गया।

महावीर का जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के कुण्डग्राम में हुआ। उनकी माँ त्रिशला लिक्षवी के राजा चैटक की बहन थी तथा पिता सिद्धार्थ ज्ञात्रिक कुल के प्रधान थे। महावीर बिम्बिसार से भी संबंधित थे। बिम्बिसार का विवाह चैटक की पुत्री चेलना से हुआ था। महावीर का विवाह यशोदा के साथ हुआ इनकी पुत्री का नाम अणोज्जा प्रियदर्शनी थी तथा उनकी पुत्री के पति का नाम जमाली था। जमाली महावीर के पहले शिष्य थे।

30 वर्ष की आयु में उन्होंने गृह त्याग दिया। गृह त्यागने का उद्देश्य सत्य की खोज करना था। वे एक लम्बे समय तक मख्खली गोशाल के साथ रहे। जिसने उन्हें छोड़कर आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना की। 42 वर्ष की आयु में जम्भीग्राम नामक स्थान पर ऋजु पालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस महाज्ञान को केवल्य कहा जाता है। तभी से उन्हें कैवलिन, जितेन्द्रिय, निर्ग्रन्थ (सभी बंधनों से मुक्त), अरिहंत, महावीर आदि नामों से पुकारा जाता है। इन्होंने अपना पहला भाषण अपने 11 शिष्यों के बीच दिया जिन्हें गंधार के नाम से जानते हैं। पावापुरी नामक स्थान पर पहला भाषण दिया तथा इस महासंघ आश्रम की स्थापना की। 72 वर्ष की आयु 468 ई. पू. में इनकी मृत्यु बिहार के नालंदा जिले के पावापुरी में हो गयी। महावीर की मृत्यु के पश्चात् केवल सुधर्म ही एक ऐसे शिष्य थे जो जीवित थे।

जैन धर्म की शिक्षायें

महावीर स्वामी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिये। मगध में बोली जाने वाली प्राकृत मागधी कहलाती है। जैन धर्म में बौद्ध धर्म के समान संसार को दुख मूलक माना गया है। जैन धर्म भी तृष्णा अर्थात् लालच को सांसारिक दुःखों का कारण मानता है तथा त्याग और

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

गोम्मतेश्वर प्रतिमा

बाहुबली प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र थे। अपने बड़े भाई भरत चक्रवर्ती से युद्ध के बाद वह मुनि बन गए। उन्होंने एक वर्ष तक कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यान किया जिससे उनके शरीर पर बेले चढ़ गई। एक वर्ष के कठोर तप के पश्चात् उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई और वह केवलिन कहलाए। अंत में उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई और वे जीवन और मरण के चक्र से मुक्त हो गए। गोम्मतेश्वर प्रतिमा के कारण बाहुबली को गोम्मटेश भी कहा जाता है। यह मूर्ति श्रवणबेलगोला, कर्नाटक, भारत में स्थित है और इसकी ऊंचाई 57 फुट है। इसका निर्माण वर्ष 981 में गंगमन्त्री और सेनापति चामुंडराय ने करवाया था। यह विश्व की चंद स्वतः रूप से खड़ी प्रतिमाओं में से एक है।



Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

| | |
|-------------|--------------------------------------|
| नवां अभिलेख | विभिन्न प्रकार के समारोहों की निंदा, |
|-------------|--------------------------------------|

| | | | |
|---------------------------|---|-----------------------------|------------------------|
| मानसेहरा, हजारा पाकिस्तान | शाहबाजगढ़ी, पेशावर, पाकिस्तान | कालसी, देहरादून, उत्तराखण्ड | गिरनार, जूनागढ़ गुजरात |
| सोपारा थाणे, महाराष्ट्र | ऐरागुडी, कुर्नूल, आन्ध्रप्रदेश | धौली, पुरी, उड़ीसा | जोगड़ा, गन्जम – उड़ीसा |
| दसवां अभिलेख | धम्म नीति की श्रेष्ठता, | | |
| ग्यारहवां अभिलेख | धम्मनीति की व्याख्या, | | |
| बारहवां अभिलेख | सर्वधर्म सदभाव, | | |
| तेरहवां अभिलेख | कलिंग युद्ध | | |
| चौदहवां अभिलेख | जनता को धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा | | |
| | | | |

दो कलिंग अभिलेख

| | |
|---|--------------------------|
| 1. तोशाली, पुरी – उड़ीसा धौली धम्म भी कहते हैं। | 2. जोगड़ा गन्जम – उड़ीसा |
|---|--------------------------|

लघु शिलालेख

इन अभिलेखों में अशोक का व्यक्तिगत इतिहास प्राप्त होता है ये अभिलेख निम्न स्थानों पर स्थित हैं।

| | | |
|-----------------------|----------------------|------------------------|
| सासाराम (बिहार) | मास्की (कर्नाटक) | भब्रू बैराठ (राजस्थान) |
| रूपनाथ (मध्यप्रदेश) | सिद्धपुर (कर्नाटक) | ब्रम्हगिरी (कर्नाटक) |
| ऐरागुडी (आंध्रप्रदेश) | अहरौरा (उत्तरप्रदेश) | पनगुरिया (मध्यप्रदेश) |

मध्यप्रदेश के अभिलेख

| | | | |
|-------------|----------------------------|----------------|-----------------|
| रूपनाथ कटनी | पनगुरिया (सारो मारो) सिहोर | साँची (रायसेन) | गुर्जरा (दतिया) |
|-------------|----------------------------|----------------|-----------------|

नोट – भाब्रू वैराग अभिलेख में अशोक के वैराग्य की जानकारी प्राप्त होती है। मास्की (कर्नाटक) तथा गुर्जरा (दतिया) मध्यप्रदेश के अभिलेखों में अशोक के नाम का उल्लेख मिलता है। अशोक के लगभग सभी अभिलेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में हैं परन्तु उत्तर पश्चिम के अभिलेखों की लिपि खरोष्ठी है। अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप को मिली। कंधार स्थित 'सर-ए-कुन्हा' का अभिलेख दो भाषाओं— अरामेईक तथा यूनानी भाषा में है। रुम्मिनदेई (नेपाल) अभिलेख अशोक का सबसे छोटा अभिलेख है।

लघु स्तंभलेख

इन स्तंभलेखों में अशोक के राज घोषणाएं अंकित हैं।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

273 ईसवी पूर्व में सम्राट अशोक मगध का शासक बना। किन्तु आंतरिक अशांति के कारण उसका राज्याभिषेक 4 वर्ष बाद अर्थात् 269 ईसवी पूर्व में हुआ। सम्राट बनने से पूर्व अशोक अवन्ति का कुमारामात्य था। चक्रवर्ती सम्राट अशोक विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली भारतीय मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे। सम्राट अशोक का पूरा नाम देवानांप्रिय अशोक मौर्य (राजा प्रियदर्शी देवताओं का प्रिय) था। उनका राजकाल ईसा पूर्व 269 से 232 में था। मौर्य राजवंश के चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अखंड भारत पर राज्य किया है तथा उनका मौर्य साम्राज्य उत्तर में हिन्दुकुश की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी के दक्षिण तथा मैसूर तक तथा पूर्व में बांग्लादेश से पश्चिम में अफगानिस्तान, ईरान तक पहुँच गया था। सम्राट अशोक ने संपूर्ण एशिया में तथा अन्य आज के सभी महाद्विपों में भी (बौद्ध धर्म) धर्म का प्रचार किया। सम्राट अशोक के संदर्भ के स्तंभ एवं शिलालेख आज भी भारत के कई स्थानों पर दिखाई देते हैं।

यह बिन्दुसार का पुत्र था। विभिन्न अभिलेखों में अशोक के विभिन्न नाम मिलते हैं जैसे :— मास्की के अभिलेख में अशोक गुर्जरा के अभिलेख में देवनामप्रिय भाब्रु बैराठ के अभिलेख में प्रियदर्शी राजा मगध बाराबर गुफा के अभिलेख में प्रियदर्शी राजा रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में अशोक मौर्य पुराण में अशोक वर्धन।

चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 8 वें वर्ष (261 ई. पू.) में कलिंग पर आक्रमण किया था। आन्तरिक अशांति से निपटने के बाद 269 ई. पू. में उनका विधिवत राज्याभिषेक हुआ। तेरहवें शिलालेख के अनुसार कलिंग युद्ध में 1 लाख 50 हजार व्यक्ति बन्दी बनाकर निर्वासित कर दिए गये, 1 लाख लोगों की हत्या कर दी गयी। सम्राट अशोक ने भारी नरसंहार को अपनी आँखों से देखा। इससे द्रवित होकर सम्राट अशोक ने शान्ति, सामाजिक प्रगति तथा धार्मिक प्रचार किया।

कलिंग युद्ध ने सम्राट अशोक के हृदय में महान परिवर्तन कर दिया। उनका हृदय मानवता के प्रति दया और करुणा से उद्देलित हो गया। उन्होंने युद्धक्रियाओं को सदा के लिए बन्द कर देने की प्रतिज्ञा की। यहाँ से आध्यात्मिक और धम्म विजय का युग शुरू हुआ। उन्होंने महान बौद्ध धर्म को अपना धर्म स्वीकार किया।

सिंहली अनुश्रुतियों दीपवंश एवं महावंश के अनुसार सम्राट अशोक को अपने शासन के चौदहवें वर्ष में निगोथ नामक भिक्षु द्वारा बौद्ध धर्म की दीक्षा दी गई थी। तत्पश्चात् मोगली पुत्र तिस्स के प्रभाव से वे पूर्णतः बौद्ध हो गये थे। दिव्यदान के अनुसार सम्राट अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का श्रेय उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु को जाता है। सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल के दसवें वर्ष में सर्वप्रथम बोधगया की यात्रा की थी। तदुपरान्त अपने राज्याभिषेक के बीसवें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की थी तथा लुम्बिनी ग्राम को करमुक्त घोषित कर दिया था।

अशोक के शासनकाल में ही पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता मोगलिपुततिस ने की। यहीं अभिधम्मपिटक की रचना भी हुई और बौद्ध भिक्षु विभिन्न देशों में भेजे गये जिनमें अशोक के पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा भी सम्मिलित थे, जिन्हें श्रीलंका भेजा गया। अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना लिया और साम्राज्य के सभी साधनों को जनता के कल्याण हेतु लगा दिया। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए निम्नलिखित साधन अपनाये—

1. धर्मयात्राओं का प्रारम्भ,
2. राजकीय पदाधिकारियों की नियुक्ति,
3. धर्म महामात्रों की नियुक्ति,
4. दिव्य रूपों का प्रदर्शन,
5. धर्म श्रावण एवं धर्मोपदेश की व्यवस्था,
6. लोकाचारिता के कार्य,
7. धर्मलिपियों का खुदवाना,

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

मंत्रियों को आमात्य कहा जाता था। प्रमुख आमात्य इस प्रकार थे –

| | |
|--------------------|--------------------------------|
| अमात्या महामात्य | सीमावर्ती क्षेत्रों के प्रभारी |
| धम्म महामात्य | धार्मिक मामलों का मंत्री |
| सेनानी महामात्य | रक्षा मंत्री |
| व्याहारिक महामात्य | विधि और न्याय मंत्री |
| कुमारामात्य | राज्यों के राज्यपाल |

नौकरशाहों को तीर्थ के नाम से जाना जाता था। तीर्थों की कुल संख्या 18 थी। उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं—

| | |
|---------------|-------------------------------------|
| सन्निधाता | खजाने के अधिकारी |
| नायक | नगर सिपाही |
| व्यवहारिक | मुख्य न्यायाधीश |
| अन्त्रावेषिका | हरम (महारानियों का निवास) का मुखिया |
| कर्मांतिक | उद्योग अधिकारी |
| दंडपाल | पुलिस प्रमुख |
| अन्तपाल | सीमावर्ती सुरक्षा अधिकारी |

प्रांतीय प्रशासन – मौर्य साम्राज्य पाँच प्रांतों में विभाजित था।

| प्रांत | राजधानी | |
|---------------|------------|----------------------|
| प्राची | पाटलिपुत्र | पूर्वी प्रांत |
| अविन्तराष्ट्र | उज्जयिनी | पश्चिमी प्रांत |
| उत्तरा पथ | तक्षशिला | उत्तरी प्रांत |
| कलिंग | तौशाली | दक्षिण पूर्वी प्रांत |
| दक्षिणापथ | सुवर्णगिरी | दक्षिण |

| प्रशासनिक इकाई | नाम | प्रमुख |
|----------------|---------------------------|--|
| प्रांत | चक्र | कुमार/राष्ट्रपाल |
| जिला | अहार/विषय | प्रादेशिक जिलों का प्रशासनिक मुखिया राजुक जिलों का राजस्व का मुखिया |
| संग्रहण | तहसील – 10 गाँवों का समूह | गोप |

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

उत्तर मौर्य काल

मौर्य सम्राज्य के पतन के बाद भारत में कोई बड़ा साम्राज्य तत्काल दृष्टिगोचर नहीं होता है मध्य एशिया से कई बार विदेशी आक्रमण हुए। इन आक्रमणकारियों ने एक बड़े क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इनमें हिन्द यवन, शक और कुषाण प्रमुख थे।

उत्तर मौर्य युग के शासक

| विदेशी राजवंश | संस्थापक |
|---------------|--|
| हिन्द यूनानी | संस्थापक डेमिट्रिएस सबसे प्रसिद्ध शासक मिनान्डर (165 से 145 ई पू) इन्हे इंडोग्रीक हिन्द यवन एवं बैक्ट्रियन ग्रीक के नाम से भी जाना जाता है। |
| शक | सबसे प्रसिद्ध शासक रुद्रदामन था। भारतीय उपमहाद्वीप में तक्षशिला महाराष्ट्र मथुरा तथा उज्जैन में शकों की भिन्न भिन्न शाखाएँ स्थापित हुई। |
| पार्थियन | पार्थियन मध्य एशिया में ईरान से आये थे। गोंदोफर्निज इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था, इसने देवव्रत की उपाधि ली थी। |
| कुषाण | कुषाण मध्य एशिया की यूची जाति के थे। यूची एक कबीला था। जो पांच कुलों में बंट गया था। कुषाण उनमें से एक कुल था। कुषाण वंश का सर्वाधिक विख्यात शासक कनिष्क था। जिसने 78 ईसवी में एक संवत चलाया जो शक संवत कहलाता है। वर्तमान में इसे भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। इसकी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) तथा मथुरा थी। बौद्ध धर्म की चतुर्थ बौद्ध संगिति कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के कुण्डलवन में आयोजित की गई थी। |

भारतीय राजवंश

| | |
|------------------|---|
| शुंग 185 ई पू | मौर्य सम्राज्य के पतन के पश्चात मगध की सत्ता शुंगों के हाथ में आई। इस वंश का संस्थापन पुष्यमित्रशुंग था। शुंग ब्राह्मण थे और उज्जैन प्रदेश के निवासी थे। इस वंश का अंतिम शासक देवभूति था। |
| कण्व 75 ई पू | अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या करके वसुदेव ने कण्व वंश की नींव डाली थी। यह भी ब्राह्मण वंश था। |
| चेदी 185 ई पू | कलिंग के चेदी वंश से संबंधित जानकारी का स्रोत इस वंश के महान शासक खारवेल का हाथी गुंफा अभिलेख है। इस अभिलेख से अप्रत्यक्ष रूप से पता चलता है कि चेदी वंश का संस्थापक महामेघ वाहन नामक व्यक्ति था। |
| सातवाहन 230 ई पू | सातवाहन शक्ति ने किसी न किसी रूप में लगभग 400 वर्षों तक शासन किया जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है। इस वंश का संस्थापक सिमुक था तथा प्रतिष्ठान इस वंश की राजधानी थी। |

मौर्यों के विदेशी उत्तराधिकारी

इण्डो ग्रीक या बैक्ट्रियन

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

कुषाण वंश

कुषाण मध्य एशिया के पाँच यूची कबीलों में से एक थे। उन्होंने पश्चिमोत्तर भारत में पार्थियन अथवा पहलवों का स्थान लिया। प्रथम कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कणफिशस था। जिसने भारत में सोने के सिक्के चलाये।

कुषाणों के द्वितीय वंश का संस्थापक कनिष्क था। जिसने अपनी राजधानी पेशावर (पुरुषपुर) तथा मथुरा को बनाया। उसने 78 ई. में शक कैलेण्डर या शक संवत् प्रारंभ किया। उसे द्वितीय अशोक के नाम से भी जाना जाता है। शक संवत् भारत का राष्ट्रीय संवत् है। कनिष्क ने बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का अनुयायी बना। प्रथम शताब्दी ई. में इसने कुण्डलवन (कश्मीर में) चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया।

कुषाण अत्यन्त समृद्ध थे, क्योंकि उन्होंने महान रेशम मार्ग पर नियंत्रण कर लिया। कुषाण बड़ी मात्रा में सोने के सिक्के जारी करने वाले भारत के पहले शासक थे। पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन, चरक तथा माथ कनिष्क के दरबार में रहते थे। अंतिम महान कुषाण शासक वसुदेव था। कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर का निर्माण करवाया। उसने गांधार शैली को संरक्षण दिया। कनिष्क ने पेशावर के प्रसिद्ध टॉवर का निर्माण करवाया। जिसकी ऊँचाई 400 फीट थी तथा वह लकड़ी का बना था। उसने तक्षशिला के निकट भी एक टॉवर बनवाया। उसके शासनकाल में गांधार शैली में बौद्धिसत्त्व की प्रतिमाओं का निर्माण हुआ।

विभिन्न कलाओं का विकास

- 1. गान्धार कला** – मुख्य केन्द्र—पेशावर, जलालाबाद, तक्षशिला। मुख्य संरक्षक—शक और कुषाण। यह यूनानी और भारतीय शैली की मिश्रित कला थी। इसकी प्रमुख विशेषता—घुंघराले बाल तथा शारीरिक शौष्ट्य है। बामियान इस कला का प्रमुख केंद्र था, बामियान को अभी हाल ही में सार्क की सांस्कृतिक राजधानी घोषित किया गया है।
- 2. मथुरा कला** – मुख्य केन्द्र—मथुरा। यह पुरी तरह से भारतीय कला शैली है। यह केवल बौद्ध धर्म से संबंधित नहीं थी। इस शैली से बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा ब्राह्मण धर्म तीनों ही प्रभावित थे। इस कला के मुख्य संरक्षक कुषाण थे।
- 3. अमरावती कला** – इसका मुख्य केन्द्र नागार्जुनकोण्डा तथा अमरावती था। इसके मुख्य संरक्षक सातवाहन तथा इच्छवांकु वंश के शासक थे। इस शैली में मुख्य रूप से सफेद संगमरमर का उपयोग किया जाता था। भावनाओं की अभिव्यक्ति इस शैली की मुख्य विशेषता थी।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

श्री शतकर्णी द्वितीय के स्थान पर उसका पुत्र लम्बोदर गद्दी पर बैठा। इसके पश्चात् सातवाहन वंश के आठ शासकों ने शासन किया तथा उन्होंने अपने साम्राज्य का अधिकांश भाग खो दिया। हाल उनमें से एक था। हाल ने लगभग 5 वर्षों तक शासन किया। वह संस्कृत का एक महान कवि था। हाल ने स्वयं गाथा सप्तशती रचना की। यह 700 कविताओं का एक संकलन था।

सातवाहनों का पुनर्उत्थान गौतमीपुत्र शातकर्णी के द्वारा 80 ई. में हुआ। उसे एक ब्राम्हण के नाम से भी जाना जाता था। उसे सातवाहन वंश का सबसे महान शासक माना जाता है। गौतमीपुत्र शातकर्णी के पश्चात् वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने सातवाहन वंश की सत्ता संभाली उसने 24 वर्षों तक शासन किया। वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने अमरावती प्राचीन स्तूप का पुर्ननिर्माण कराया।

रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख के अनुसार शक शासक रुद्रदामन दक्षिणा पथपति को हराया था। यह हारने वाला राजा संभवतः शिव श्री शातकर्णी ही था। सातवाहन वंश का अंतिम महान शासक यज्ञ शातकर्णी था। सातवाहनों की राजधानी पैठण या प्रतिष्ठानपुर में स्थित थी तथा इनकी आधिकारिक भाषा प्राकृत थी। सातवाहन ब्राह्मण थे। उन्होंने ब्राह्मणों को कृषि योग्य भूमि देने की प्रथा प्रारंभ की। सातवाहनों ने बड़ी मात्रा में सिक्के जारी किये। अततः तीसरी शताब्दी में सातवाहनों से सत्ता छीनकर इछवाकु वंश के शासकों ने उस पर अधिपत्य कर लिया। सातवाहनों का साम्राज्य का पूर्वी भाग कलिंग के चेदी शासकों द्वारा हथिया लिया गया।

नोट – सातवाहन मातृवंशीय थे। गौतमीपुत्र शातकर्णी की माँ का नाम बलसारा था। सातवाहनों की उत्पत्ति का पता नासिक के ही अभिलेख से मिलता है।



Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

स्कन्दगुप्त (455 ई. – 467 ई.)

यह कुमारगुप्त का पुत्र था। उसके पिता की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर बैठा वह गुप्तवंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था। उसकी मृत्यु के पश्चात् गुप्तवंश का पतन प्रारंभ हो गया। स्कन्दगुप्त ने सुदर्शन झील के पुर्नूद्धार का कार्य सौराष्ट्र के गवर्नर पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित को सौंपा था। जिसने झील के किनारे एक विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया था।

गुप्तकालीन प्रशासन

संपूर्ण गुप्त प्रशासन राजा में केंद्रित था। कुछ अन्य पदाधिकारी उसके कर्तव्य पालन में उसकी सहायता करते थे। उनमें से कुछ मुख्य इस प्रकार हैं—

| | |
|---------------------|---|
| महाबलिधिकृत | सेनापति |
| महादण्डनायक | मुख्य न्यायाधीश |
| दण्डपाशिक | पुलिस विभाग का प्रमुख |
| भण्डारागाराधिक्रेता | मुख्य राजकोष अधिकारी |
| महापाक्षपाटालिक | मुख्य लेखाधिकारी |
| विनयाकि संस्थापक | शिक्षा विभाग का प्रमुख |
| सर्वाध्यक्ष | सभी विभागों का निरीक्षक |
| महामहीपिलूपति | हाथियों की सेना का नियंत्रक एवं मुख्य कार्यपालक |
| युक्त पुरुष | युद्ध के समय लेखा-जोखा रखने वाला व्यक्ति |
| रणभण्डागारिक | सेना के भण्डार गृहों का मुखिया |
| महानृपति | पैदल सेना का मुखिया |

करों के प्रकार

‘प्रयाग प्रशस्ति’ में शक्तिशाली गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त को पृथ्वी पर शासन करने वाला ईश्वर का प्रतिनिधि कहा गया है। साथ ही उसकी तुलना कुबेर, वरुण, इन्द्र व यमराज आदि देवताओं से भी की गई है। गुप्त राजाओं ने अपने साम्राज्य के भीतर अनेक छोटे-छोटे राजाओं पर शासन किया था। साम्राज्य की प्रशासन व्यवस्था और राजस्व आदि की नीति बहुत सुदृढ़ थी। गुप्त काल में राजकीय आय के प्रमुख स्रोत ‘कर’ थे, जो निम्नलिखित थे—

भाग — यह कर राजा को भूमि के उत्पादन से प्राप्त होने वाले भाग का छठा हिस्सा था।

भोग — सम्भवतः राजा को हर दिन फल-फूल एवं सब्जियों के रूप में दिया जाने वाला कर।

प्रणयकर — गुप्त काल में यह ग्रामवासियों पर लगाया गया अनिवार्य या स्वेच्छा चन्दा था। भूमिकर भोग का उल्लेख ‘मनुस्मृति’ में भी हुआ है। इसी प्रकार ‘भेंट’ नामक कर का उल्लेख ‘हर्षचरित’ में आया है।

उपरिकर एवं उद्वंगकर — यह एक प्रकार का भूमि कर होता था। भूमि कर की अदायगी दोनों ही रूपों में ‘हिरण्य’ (नकद) या ‘मेय’ (अन्न) में किया जा सकता था, किन्तु छठी शती के बाद किसानों को भूमि कर की अदायगी अन्न के रूप में करने के लिए बाध्य होना पड़ा। भूमि का स्वामी कृषकों एवं उनकी स्त्रियों से बेकार या विष्टि लिया करता था। गुप्त अभिलेखों में भूमिकर को ‘उद्वंग’ या ‘भागकर’ कहा गया है। स्मृति ग्रंथों में इसका ‘राजा की वृत्ति’ के रूप में उल्लेख किया गया है।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

- गुफा 1 को एलीफैंटा की ग्रेट कैव भी कहा जाता है जो इस स्थल की सबसे भव्य एवं धीरे-धीरे विकसित ब्राह्मणिक रॉक-कट वास्तुकला को दर्शाता है।
- स्थल की हिंदू गुफाएं भगवान शिव को समर्पित हैं।

कार्लो गुफाएं

- कार्लो की गुफाएँ महाराष्ट्र में लोनावाला के निकट कार्लो में स्थित हैं।
- ये चट्टान काटकर निर्मित प्राचीन बौद्ध मन्दिर हैं। यहां पर एक भव्य चैत्यग्रह तथा तीन विहार हैं।
- यह चैत्यग्रह सबसे बड़ा और सबसे सुरक्षित दशा में है। यह मुख्य द्वार से पीछे के द्वार तक 124 फुट 3 इंच लम्बा, 45 फुट 5 इंच चौड़ा तथा 46 फुट ऊंचा है। इसके सामने का भाग दुमंजिला है।

बादामी गुफाएं

- कर्नाटक के बगलकोट जिले की ऊंची पहाड़ियों में स्थित बादामी गुफा का आकर्षण अद्भुत है।
- बादामी गुफा में निर्मित हिंदू और जैन धर्म के चार मंदिर अपनी खूबसूरत नक्काशी, कृत्रिम झील और शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध हैं।
- बादामी गुफा में दो मंदिर भगवान विष्णु, एक भगवान शिव को समर्पित है और चौथा जैन मंदिर है।

बाघ गुफाएं

- मध्य प्रदेश में धार जिले से 97 किलोमीटर दूर विन्ध्य पर्वत के दक्षिणी ढलान पर हैं। ये इंदौर और वडोदरा के बीच में बाघिनी नदी के किनारे स्थित हैं।
- इन गुफाओं का सम्बन्ध बौद्ध धर्म से है। यहां अनेक बौद्ध मठ और मंदिर देखे जा सकते हैं। इन गुफाओं में चैतन्य हॉल में स्तूप हैं और रहने की कोठरी भी बनी हैं जहाँ बौद्ध भिक्षु रहा करते थे।
- कुछ इतिहासकार इन्हें चौथी और पांचवी सदी में निर्मित मानते हैं।
- अजन्ता गुफाओं की तर्ज पर ही बाघ गुफाएं बनी हुई हैं। इन गुफाओं की खोज 1818 में की गई थी।

भर्तृहरि की गुफा

- यह गुफा उज्जैन मुख्य नगर से थोड़ी दूरी पर शिप्रा नदी के तट पर एक सुनसान क्षेत्र में स्थित है। यह गुफा नाथ संप्रदाय के साधुओं का साधना स्थल है। गुफा के अंदर जाने का रास्ता काफी छोटा है। गुफा में भर्तृहरि की प्रतिमा के सामने एक धुनी भी है, जिसकी राख हमेशा गर्म ही रहती है।
- प्राचीन उज्जैन को उज्जयिनी के नाम से जाना जाता था। उज्जयिनी के परम प्रतापी राजा हुए थे विक्रमादित्य। विक्रमादित्य के पिता महाराज गंधर्वसेन थे और उनकी दो पत्नियां थीं। एक पत्नी के पुत्र विक्रमादित्य और दूसरी पत्नी के पुत्र थे भर्तृहरि। गंधर्वसेन के बाद उज्जैन का राजपाठ भर्तृहरि को प्राप्त हुआ, क्योंकि भर्तृहरि विक्रमादित्य से बड़े थे। राजा भर्तृहरि धर्म और नीतिशास्त्र के ज्ञाता थे। प्रचलित कथा के अनुसार राजा भर्तृहरि अपनी पत्नी पिंगला से बहुत प्रेम करते थे। एक दिन जब राजा भर्तृहरि को पता चला की रानी पिंगला किसी ओर पर मोहित है तो उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे राजपाठ छोड़कर गुरु गोरखनाथ के शिष्य बन गए।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

महाराजाधिराज जैसी सम्मानजनक उपाधि धारण की। प्रभाकर वर्धन की पत्नी यशोमती के दो पुत्र राजवर्धन एवं हर्षवर्धन हुए तथा एक कन्या भी जिसका नाम राजश्री था। राजश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि शासक गृहवर्मा के साथ हुआ था। मालवा के शासक देवगुप्त ने वर्मा की हत्या कर दी और राजश्री को बंदी बना लिया। राजवर्धन ने देवगुप्त को मार डाला परंतु उसके मित्र गौंड नरेश शशांक ने धोखा देकर राज्यवर्धन की हत्या कर दी। शशांक शैव धर्म का अनुयाई था जिसने बोधि वृक्ष को कटवा दिया।

हर्षवर्धन (606–647 ई.)

606 ई. में हर्षवर्धन थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। हर्षवर्धन के बारे में जानकारी के स्रोत हैं— बाणभट्ट का हर्षचरित, ह्वेनसांग का यात्रा विवरण और स्वयं हर्ष की रचनाएं। हर्षवर्धन का दूसरा नाम शिलादित्य था। हर्ष ने महायान बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया। हर्ष ने 641 ई. में अपने दूत चीन भेजे तथा 643 ई. और 646 ई. में दो चीनी दूत उसके दरबार में आये। हर्ष ने 646 ई. में कन्नौज तथा प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया। हर्ष ने कश्मीर के शासक से बुद्ध के दंत अवशेष बलपूर्वक प्राप्त किये। हर्षवर्धन शिव का भी उपासक था। वह सैनिक अभियान पर निकलने से पूर्व रुद्र शिव की आराधना किया करता था।

हर्षवर्धन साहित्यकार भी था। उसने प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानंद तीन ग्रंथों (नाटक) की रचना की। बाणभट्ट हर्ष का दरबारी कवि था। उसने हर्षचरित, कादम्बरी तथा शुकनासोपदेश आदि कृतियों की रचना की।

ताम्रलिप्त, संप्रग्राम, देपल और भड़ौच इस काल के प्रमुख बंदरगाह थे। इस काल में वस्त्र उद्योग उत्कृष्ट था। पौधों के रेशों से बना कपड़ा 'दुकूल' कहलाता था। बाणभट्ट ने हर्षचरित में रेशम से बने अनेक प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख किया है, जैसे—नाल, तुंज, अंशुक और चीनांशुक। इस काल में सिक्कों का उपयोग कम हो गया था। इसका कारण विदेशी व्यापार का ह्रास होना था। रोमन साम्राज्य से रेशम का व्यापार बंद हो गया था। साधारण लेन—देन और स्थानीय व्यापार कौड़ियों के माध्यम से होता था। मंदिरों को दान में दी गयी भूमि को 'देवदेय' कहा जाता था। जिन ब्राह्मणों में अपने मूलकर्म और जाति स्वर को छोड़कर क्षत्रियों के कार्यों को अपना लिया था, वे ब्रह्म क्षत्रिय कहलाते थे। ब्राह्मणों को दिया जाने वाला भूमि दान अग्रहार कहलाता था। इस पर उन्हें कर नहीं देना पड़ता था। विषयपति जिले का अधिकारी होता था। भुक्ति का प्रधान उपरिक होता था। भड़ौच में बने हुए वस्त्र को 'वरोज' कहा जाता था।

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद भारत में (मुख्यतः उत्तरी भाग में) अराजकता की स्थिति बना हुई थी। ऐसी स्थिति में हर्ष के शासन ने राजनैतिक स्थिरता प्रदान की। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के शासन काल में (629 ई. पू.) में भारत आया। उसकी प्रसिद्ध पुस्तक का नाम "सीयूकी" है। उसने नालंदा विश्वविद्यालय का भी दौरा किया।

हर्षवर्धन ने अपने साम्राज्य को कई प्रांतों में बाँटा इनको भुक्ति कहा जाता था। भुक्तियां पुनः विषयों (जिलों) में बटे हुये थे। विषय पुनः तहसील या पाठक में बंटे हुये थे। तहसील/पाठक पुनः गाँव में बंटे हुये थे।

राष्ट्र— भुक्ति— विषय— पाठक— ग्राम

वाकाटक

सातवाहन के पतन तथा चालुक्यों के उत्थान के मध्य वाकाटकों ने नर्मदा और कावेरी के मध्य शासन किया। मूलरूप से वे बुदेलखंडी थे। इस वंश का संस्थापक विन्धशक्ति प्रवरसेन— पृथ्वीसेन (समुद्रगुप्त का समकालीन) था। इस वंश का एक अन्य शक्तिशाली शासक रुद्रसेन था जो चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का दामाद था। वाकाटक शक्ति का नाश कलचुरी तथा कदम्ब वंश के शासकों द्वारा किया गया।

कदम्ब

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

महेंद्रवर्मन् का पुत्र नरसिंहवर्मन् प्रथम (630–668) इस राजवंश का सर्वश्रेष्ठ सम्राट् था। इसके समय में पल्लव दक्षिणी भारत की प्रमुख शक्ति बन गए। उसने चालुक्य नरेश पुलकेशिन् द्वितीय के तीन आक्रमणों का विफल कर दिया। इन विजयों से उत्साहित होकर उसने अपनी सेना चालुक्य साम्राज्य पर आक्रमण के लिए भेजी जिसने 642 ई. में चालुक्यों की राजधानी वातापी पर अधिकार कर लिया। इस विजय के उपलक्ष में उसने वातापिकोंड की उपाधि धारण की। युद्ध में पुलकेशिन् की मृत्यु के कारण चालुक्य साम्राज्य अव्यवस्थित रहा। फलस्वरूप चालुक्य साम्राज्य के दक्षिणी भाग पर पल्लवों का अधिकार बना रहा।

उसका विरुद्ध महामल्ल था। उसने महाबलिपुरम् का गौरव बढ़ाया। यहाँ उसने एक ही प्रस्तरखंड से बने कुछ मंदिरों या रथों का निर्माण कराया। 640 में चीनी यात्री ह्वेनसांग पल्लव साम्राज्य में आया। उसने तोंडमंडलम् और कांची का वर्णन किया है। नरसिंहवर्मन् के पुत्र महेंद्रवर्मन् द्वितीय का राज्यकाल दो वर्ष (668–670) का ही था जिसमें उसे चालुक्य विक्रमादित्य के हाथों पराजित होना पड़ा। पल्लवों को स्थापत्य के लिए जाना जाता है, इनकी शैली को मामल्य शैली कहा जाता है। पल्लव की वास्तुकला से चार प्रमुख कला की शैलियाँ विकसित हुईं— (1) महेंद्रवर्मन शैली (2) मामल्ल शैली (3) राजसिंह शैली (4) अपराजित शैली

महेंद्रवर्मन शैली— महेंद्रवर्मन शैली का विकास 600 ई. से 635 ई. तक हुआ। इसके अंतर्गत महेंद्रवर्मन प्रथम के शासन में स्तम्भ युक्त मंडप बने। ये साधारण हॉल के समान हैं जिनकी पीछे की दिवार में एक कोठरियाँ बनाई गई हैं। हॉल के प्रवेश द्वार स्तम्भ पंक्तियों से बनाए गए हैं। यह वस्तुएं पहाड़ियों को काट काट कर बनाई गई हैं। इसलिए इन्हें गुहा मंदिरों की कोटि में रखा जाता है।

मामल्ल शैली— इस शैली का प्रमुख केंद्र मामल्लपुरम था। मामल्ल शैली के मंडप अपने स्थापत्य के लिए भी प्रसिद्ध हैं। पहाड़ी की चट्टानों पर गंगावतरण, शेषशायी विष्णु, महिषासुर वध, वराह अवतार और गोवर्धन धारण के दृश्य बड़ी सजीवता और सुंदरता के साथ उत्कीर्ण किए गए हैं। मामल्ल शैली के रथ 'सप्त पैगोड़ा' के नाम से प्रख्यात हैं। रथों में कुछ की छत पिरैमिड के आकार की है और कुछ के ऊपर शिखर हैं।

राजसिंह शैली— इस शैली का सर्वप्रथम उदाहरण 'शोर मंदिर' है। पल्लव कला की प्रमुख विशेषताएँ— सिंह स्तम्भ, मंडप के सुदृढ़ स्तम्भ, शिखर, चार दिवारी और उसमें भीतर की ओर बने हुए छोटे-छोटे कक्ष, अलंकरण इत्यादि यह शैली कैलाश मंदिर में पाई जाती है। इस शैली का और भी अधिक विकसित मंदिर बैकुंठ पेरुमाल का है। इसमें गर्भ ग्रह मंडप और प्रवेशद्वार सभी एक दूसरे से संबंध हैं।

अपराजित शैली— इस शैली का प्रमुख उदाहरण बाहूर का मंदिर है। पल्लव कला की इन शैलियों ने मंदिर कला के विकास में बड़ा योगदान दिया। इनकी अनेक विशेषताएं दक्षिण पूर्वी एशिया में भी पहुंची वृहत्तर भारत पर पल्लव कला का प्रभाव हैं।

वेगी के चालुक्य

पूर्वी आन्ध्रप्रदेश संस्थापक— कुब्जा विष्णु वर्धन। राजधानी वेगी (आन्ध्रप्रदेश)। कुब्जा विष्णु वर्धन पुलकेशिन द्वितीय का भाई था।

कल्याणी के चालुक्य

संस्थापक कालिया द्वितीय इसने अंतिम राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष को हराकर कल्याणी के चालुक्यों की नींव रखी।

राष्ट्रकूट

राष्ट्रकूटों के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना दन्तिदुर्ग ने की थी। जो कि पुलकेशिन द्वितीय का मंत्री था। इनकी आरम्भिक राजधानी नासिक थी, जो बाद में मान्यखेत स्थानांतरित कर दी गई। यह वर्तमान में महाराष्ट्र के शोलापुर के निकट है। दन्तिदुर्ग ने चालुक्य नरेश कीर्ति वर्मन को पराजित किया। कृष्ण प्रथम दन्तिदुर्ग का उत्तराधिकारी था। इसने द्रविण शैली में एलोरा के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। कृष्णप्रथम का उत्तराधिकारी गोविन्द हुआ। उसके बाद ध्रुव शासक बना जिसने स्वयं को पालो और प्रतिहारों के त्रिकोणीय संघर्ष में शामिल किया तथा प्रतिहार राजा वत्सराज तथा पाल राजा धर्मपाल को हराया। राष्ट्रकूट वंश का अंतिम महानशासक अमोघवर्ष था। वह एक विद्वान शासक था, जिसने कन्नड़ भाषा में कवि राजमार्ग नामक ग्रंथ की रचना की।

Rudra's IAS NOTES HISTORY MPPSC/UPSC (Pre) 2019

चोल वंश का संस्थापक विजयालय (850–870–71 ई.) पल्लव अधीनता में उरैयुर प्रदेश का शासक था। विजयालय के पश्चात् आदित्य प्रथम (871–907), परांतक प्रथम (907–955) ने क्रमशः शासन किया। परांतक प्रथम ने पांड्य–सिंहल नरेशों की सम्मिलित शक्ति को, पल्लवों व राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय को भी पराजित किया। चोल शक्ति एवं साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक परांतक ही था। परांतक प्रथम के बाद के 32 वर्षों में अनेक चोल राजाओं ने शासन किया।

इसके पश्चात् राजराज प्रथम (985–1014) ने चोल वंश की प्रसार नीति को आगे बढ़ाते हुए अपनी अनेक विजयों द्वारा अपने वंश की मर्यादा को पुनः प्रतिष्ठित किया। उसने सर्वप्रथम पश्चिमी गंगों को पराजित कर उनका प्रदेश छीन लिया। तदनंतर पश्चिमी चालुक्यों से उनका दीर्घकालिक परिणामहीन युद्ध आरंभ हुआ। इसके विपरीत राजराज को सुदूर दक्षिण में आशातीत सफलता मिली। इसने तंजौर में राजराजेश्वर या बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। इसने श्रीलंका के शासक महेन्द्र पंचम को पराजित कर उसकी राजधानी अनुराधापुर को नष्ट कर दिया तथा नई राजधानी पोलोन्नरुवा बनाई।

राजराज के पश्चात् उनके पुत्र राजेंद्र प्रथम (1012–1044) सिंहासनारूढ़ हुए। राजेंद्र प्रथम भी अत्यंत शक्तिशाली सम्राट् थे। राजेंद्र ने चेर, पांड्य एवं सिंहल जीता तथा उन्हें अपने राज्य में मिला लिया। उन्होंने पश्चिमी चालुक्यों को कई युद्धों में पराजित किया, उनकी राजधानी को ध्वस्त किया किंतु उनपर पूर्ण विजय न प्राप्त कर सके। राजेंद्र के दो अन्य सैनिक अभियान अत्यंत उल्लेखनीय हैं। उनका प्रथम सैनिक अभियान पूर्वी समुद्रतट से कलिंग, उड़ीसा, दक्षिण कोशल आदि के राजाओं को पराजित करता हुआ बंगाल के विरुद्ध हुआ। उसने संपूर्ण श्रीलंका पर विजय प्राप्त की। उसने दक्षिण उत्तरप्रदेश पर भी विजय प्राप्त की तथा गंगैकोण्डचोल की उपाधि धारण की। उसने कावेरी नदी के किनारे अपनी राजधानी गंगैकोण्डचोलपुरम की स्थापना की। उसने यहां एक भव्य मंदिर का निर्माण भी करवाया जिसे गंगैकोण्डचोल पुरम के नाम से जाना जाता है। चोल अपनी शक्तिशाली नौ सेना के लिए प्रसिद्ध थे। यह भी ज्ञात होता है कि पराजित राजाओं को यह जल अपने सिरों पर ढोना पड़ा था। किंतु यह मात्र आक्रमण था, इससे चोल साम्राज्य की सीमाओं पर कोई असर नहीं पड़ा।

राजेंद्र का दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण मलयद्वीप, जावा और सुमात्रा के शैलेंद्र शासन के विरुद्ध हुआ। यह पूर्ण रूप से नौसैनिक आक्रमण था। शैलेंद्र सम्राटों का राजराज से मैत्रीपूर्ण व्यवहार था किन्तु राजेंद्र के साथ उनकी शत्रुता का कारण अज्ञात है। राजेंद्र को इसमें सफलता मिली। राजराज की भाँति राजेंद्र ने भी एक राजदूत चीन भेजा। इनकी राजधानी तंजौर (तमिलनाडु) थी।

चोल प्रशासन की सबसे मुख्य विशेषता स्थानीय स्वशासन थी। चोल काल में ग्राम सभा को उर कहते थे। उर समितियों के माध्यम से कार्य करती थी जिन्हे वरियम कहा जाता था। वरियम में 30 सदस्य शामिल होते थे।

प्राचीन कालीन प्रमुख राजवंश

| राजवंश | संस्थापक | राजधानी | राजवंश | संस्थापक | राजधानी |
|---------------|------------------|-----------------|-----------------|------------|------------|
| हर्यक वंश | बिम्बिसार | राजगृह | राष्ट्रकूट | दंतिदुर्ग | मान्यखेत |
| शिशुनाग वंश | शिशुनाग | पाटलीपुत्र | पाल | गोपाल | मुंगेर |
| नंद वंश | महापद्म नंद | पाटलीपुत्र | गुर्जर प्रतिहार | हरिश्चंद्र | कन्नौज |
| मौर्य वंश | चंद्रगुप्त मौर्य | पाटलीपुत्र | गहड़वाल | चंद्रदेव | कन्नौज |
| शुंग वंश | पुष्यमित्र शुंग | विदिशा | चहमान | वासुदेव | अजमेर |
| कण्व वंश | वसुदेव | पाटलीपुत्र | चन्देल | नानुक | खजुराहो |
| सातवाहन वंश | सिमुक | प्रतिष्ठान | प्रमार | उपेन्द्र | धार |
| इच्छवांकु वंश | श्री शांतमूल | नागार्जुन कोण्ड | सेलंकी | मूलराज | अन्हिलवाड़ |
| कुषाण वंश | कड़फिशस | पुरुषपुर | कल्चुरी | कोक्कल | त्रिपुरी |